प्रभुता से प्रभु दूर

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

प्रभुता और लघुता नदी के दो तट हैं। लघुता विनम्रता है। लघुता सरलता और ऋजुता है। प्रभुता अहंकार है। जब मनुष्य में यह भावना आ जाती है कि मुझसे बड़ा कोई नहीं है, मैं सब कुछ कर सकता हूं, पूरा विश्व मेरे अधीन है, मैं ही सब कुछ कर सकता हूं तो अहंकार की भावना प्रबल हो जाती है। प्रभुता पतन के गर्त में गिरा देती है। प्रभुता पाने के बाद मनुष्य अंधा हो जाता है। धन–दौलत, युवा अवस्था, प्रभुता अहंकार को बढ़ावा देते हैं। लघुता मानव को विनम्रता प्रदान करती है। लघुता के द्वारा आदमी प्रभुता को प्राप्त करता है। इसी से हम अपने को पहचान पाते हैं। जो जितना बड़ा अहंकारी होता है ईश्वर उससे उतना अधिक दूर चला जाता है। इसलिए अहंकार नहीं करना चाहिए।

जिस व्यक्ति में विनम्रता होती है, जिस व्यक्ति में निरहंकारता होती है, उस व्यक्ति का सामाजिक विकास सांस्कृतिक विकास बहुत अधिक होता है। ऐसा व्यक्ति सहनशील और दूसरों को सम्मान देने वाला होता है। किन्तु जिस व्यक्ति में अहंकार होता है उसका धीरे–धीरे पतन हो जाता है। भगवान् श्रीरामचन्द्र और लंकापति रावण का दृष्टान्त इस संबंध में विचारणीय है। जब भगवान् राम और रावण की सेनाएं आमने–सामने आकर के खड़ी हुई तो भगवान् राम पैदल, बिना अस्त्र–शस्त्र के भालू–बन्दरों की सेना के साथ खड़े थे। दूसरी तरफ रावण रथ पर सवार और चतुरंगड़ी सेना के साथ अहंकार से युक्त युद्ध क्षेत्र में भगवान् राम को ललकार रहा था। यह युद्ध लघुता और प्रभुता का युद्ध था, जिसमें लघुता विजयी हुई और प्रभुता पराजित।

लघुता का गुण शिक्षा, विद्या और दूसरों को सम्मान देने से प्राप्त होता है। विद्या को प्राप्त करने के बाद भी यदि लघुता नहीं आई तो समझना चाहिए कि विद्या का वास्तविक मूल्य अभी नहीं प्राप्त हुआ। जिस समय वृक्ष में फल आता है तो वृक्ष की शाखाएं नम जाती है। इसी

प्रकार विद्या और विनय से सम्पन्न व्यक्ति नम्र बन जाता है। परन्तु कुछ लोग ऐसे है कि विद्या की प्राप्ति के बाद भी उनमें नम्रता न आकर अहंकार आ जाता है और यह अहंकार उनके विनाश का कारण होता है।

वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत और आगमों में यही बताया गया है कि मानव को विनयशील होना चाहिए। जिस समय रावण मृत्यु शय्या पर पड़ा हुआ था उस समय भगवान् राम ने लक्ष्मण से कहा कि रावण बहुत ज्ञानी है। उसके पास जाकर कुछ ज्ञान की शिक्षा लीजिए। लक्ष्मणजी जब अपने बड़े भाई की बात स्वीकार कर रावण के पास गये और उसके सिर के पास खड़े होकर ज्ञान प्राप्त करना चाहा तो रावण ने अपनी आंखे ही नहीं खोली। लक्ष्मणजी निराश होकर लौट आये और भगवान् राम को पूरा वृतान्त बता दिया। तब भगवान् राम ने लक्ष्मण से कहा कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए लघुता और विनम्रता आवश्यक है। पुनः जाकर रावण के पैर के पास खड़े होकर ज्ञान की याचना करना।

लघुता से जुड़ाव होता है और प्रभुता से बिखराव। एक परिवार में अनेक सदस्य पारस्परिक सौहार्द के साथ रहते है। इसका मुख्य कारण है कि बड़े लोग छोटों को स्नेह देते है और छोटे लोग बड़ों को आदर और सम्मान की दृष्टि से देखते है। इससे पारस्परिकता बनी रहती है, एक दूसरे का प्रेम और स्नेह परिवार के सभी सदस्यों को मिलता रहता है, जिससे परिवार में एकजुटता बनी रहती है और परिवार उन्नति करता है, परिवार में बिखराव नहीं आता। यही बात समाज और राष्ट्र के संबंध में भी विचारणीय है।

समाज में जहां हित चिंतन की बात हो समाज के हर सदस्य को इसके लिए मिलजुलकर कार्य करना चाहिए। विकास के किसी काम में समाज के हर व्यक्ति को मिलकर आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। राष्ट्र के संबंध में भी यह विचारणीय है। राष्ट्र को आंतरिक और बाह्य दोनों दृष्टियों से संबंध बनाकर आगे बढ़ना चाहिए। राष्ट्राध्यक्ष का कर्त्तव्य होता है कि वह विश्व के अनेक देशों के साथ मित्रता का व्यवहार करें, पड़ोसी देशों के साथ सहअस्तित्व और भाईचारे का संबंध होना चाहिए। जिससे देश को बाह्य खतरों से सुरक्षा मिल सके। राष्ट्र के अंदर अनेक जातियों के लोग, अनेक धर्मों के लोग और अनेक सम्प्रदायों के लोग रहते है।

जीवन में तीन चीजें आवश्यक है– ज्ञेय, हेय और उपादेय। ज्ञेय का अर्थ है– जानना। हमें जहां कही से भी अच्छी बाते हो उसे विनम्रता से ग्रहण कर लेना चाहिए। हेय का तात्पर्य है– बुराइयों का त्याग। उपादेय का अर्थ है– जीवन के लिए उपयोगी और समाज के लिए उपयोगी जो हमारे कर्त्तव्य है उनका हम सच्चाई से पालन करें। ऐसा करने से समाज का विकास होता है। प्रेम एक ऐसा रसायन है जो समाज के हर व्यक्ति को एक सूत्र में बांधकर रखता है। समाज और राष्ट्र की एकता इसी सूत्र से बंधी हुई है–

लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूर।

चींटी ले शक्कर चली, हाथी के सिर धूल।

अर्थात् लघुता प्रभुता प्रदान करती है और प्रभुता कभी–कभी अहंकार पैदा कर देती है। इसलिए प्रभुता का मद नहीं होना चाहिए।